॥ श्रीमहाराज ॥

सूरदासजी का जीवनचरित ।

जोधपुरनिवासी

मुंशी देवीप्रसादजी लिखित ।

॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई ।

सम्वत् १९६३ ।

सूची।

श्रीमहाराज सूरदासजी का जीवनचरित.

भाषा-कविता के राजाधिराज महाराज सूरदासजी जिनके समान अब तक कोई सत्कवि नहीं हुआ है, आज से ३२५ वर्ष पहिले इस भारतवर्ष में विद्यमान थे। यद्यपि उनकी उत्तम कविता ने उनका नाम सब ठौर विख्यात कर रखा है तो भी उनका यथार्थ जीवनचरित अद्यापि प्रगट नहीं हुआ और जो दन्तकथाओं में मिलता है वह ऐतिहासिक प्रमाणों से बहुत दूर पड़ा हुआ है इसलिये हमने उसे लिख कर कागज काला करना नहीं चाहा और यथार्थ बातों की खोज की तो कई वर्षों तक श्रम करने से जो अनुमानसिद्ध और विश्वास-योग्य वृतान्त मिले वे इस क्षुद्र गुटके में नीचे लिखे ग्रन्थों के आधार पर लिखे जाते हैं।

१—साहित्यलहरी।*	२—मुन्तख़िबउल तवारीख।
३—आईन अकबरी।	४—चौरासी वार्त्ता।
५—ब्रह्मभट्ट प्रकाश।	६—मुनशियात अबुलफ़ज़ल।
७—हरिश्चंद्र चन्द्रिका (सन् १८७८।)	

---

* यह पोथी सूरदास जी की ही बनाई हुई है।

सूरदासजी की परम्परा।

प्रसिद्ध तो यह है कि सूरदासजी सारस्वत ब्राह्मण थे परन्तु साहित्यलहरी में उन्होंने अपने वर्ण और वंश का वर्णन इस प्रकार से किया है।

पद।

प्रथम पृथु याग में, भे प्रगट अद्भुतरूप।
ब्रह्मराव, विचारि ब्रह्मा राखु नाम अनूप॥
पान पय देवी दयो, शिव आदि सुर सुख पाय।
कह्यो, दुर्गा! पुत्र तेरो भयो अति अधिकाय॥
पारि पायन सुरन के, सुर सहित अस्तुति कीन।
तासु वंश प्रसिद्ध में, भौ चन्द चारु नवीन॥
भूप पृथ्वीराज दीनो, तिनहिँ ज्वाला देश।
तनय ताके चार कीने प्रथम आपु नरेश॥
दूसरे गुनचन्द्र, ता सुत शीलचन्द्र, सरूप।
वीरचन्द, प्रताप पूरन भयो अद्भुत रूप॥
रनथंभार हमीर भूपति संग खेलत आय।
तासु वंश अनूप भो हरिचन्द अति विख्याय।
आगरा रहि गोपचल में रहे ता सुत वीर।
पुत्र जन्मे सात ताके महाभट गंभीर॥
कृष्णचन्द, उदारचन्दजु रूपचन्द सुभाइ।
बुद्धिचन्द, प्रकाश चौथो, चन्द भे सुखदाइ॥
देवचन्द प्रबोध संसृतचन्द ताको नाम।

भयो सप्तम नाम सूरजचन्द मन्दनिकाम ॥
सो समर करि शाह सेवक गये विधि के लोक ।
रहे सूरजचन्द हग तैं हीन भर वर शोक ॥
परो कूप पुकार काहू ना सुनी संसार ।
सातयें दिन आइ यदुपति कीन आपु उधार ॥
दियो चख दै कही शिशु सुनु मांगु वर जो चाइ ।
हैां कही प्रभु भक्ति चाहत शत्रु नाश सुभाइ ॥
दूसरो ना रूप देखौं देखि राधा श्याम ।
सुनत करुणासिन्धु भाखी एवमस्तु सुधाम ॥
प्रवल दच्छिन विप्रकुल तैं शत्रु ह्वै हैं नाश ।
अखिल बुद्धि विचार विद्या मान माने मास ॥
नाम राखो मोर सूरजदास सूर सुश्याम ।
भये अन्तर्धान बीते पाछली निश जाम ॥
मोहि पन सो इहै ब्रज की बसे सुख चित थाप ।
थापि गोसाईं करी मोरि आठ मद्धे छाप ॥
विप्र पृथु के याग को हैं। भाव भूर निकाम ।
सूर हैं। नँदनन्द जू को लियो मोल गुलाम ॥

अर्थ ।

पृथुराजा के यज्ञ से एक अद्भुत (पुरुष) उत्पन्न हुआ; ब्रह्माजी ने उसका नाम ब्रह्मराव रखा; देवी ने दूध पिलाया; शिवादि देवताओं ने प्रसन्न हो कर कहा कि हे देवि! तेरा पुत्र बहुत बढ़कर हुआ है। देवी ने उसको

देवताओं के चरणों में डाला और उसने उनकी स्तुति की, उसके वंश में * चन्द हुआ जिसको † पृथ्वीराज ने ‡ ज्वाला देश दिया। चन्द्र के ४ बेटों में से दूसरा गुणचन्द था उसका बेटा शीलचन्द्र हुआ जो ⁂ रण-थंभोर के राजा § हम्मीर के साथ खेला करता था

---

* यह वही चन्द है जो पृथ्वीराज रासे का कर्त्ता माना जाता है जिसके नाम से अजमेर में चांदबावड़ी है पर उसमें कोई लेख उस समय का नहीं है केवल नाम पर से लोग उसे चन्द जी की बनाई जानते हैं।

† पृथ्वीराज चौहान सम्वत् १२३४ से १२४९ तक राज-सिंहासन पर विद्यमान थे।

‡ ज्वाला देश शायद ज्वालामुखी का प्रान्त हो जो अब जिला जालंधर कहलाता है और पंजाब देश का कुछ समय तक पृथ्वीराज के आधीन रहना मुसल-मानी इतिहासों से भी सिद्ध है।

⁂ रणथंभोर बड़ा विशाल गढ़ है जहां पृथ्वीराज के पीछे चौहानों की गद्दी स्थापित हुई थी। आजकल जयपुर राज्य के अधिकार में है।

§ हरिश्चन्द्रचन्द्रिका में हम्मीर को भीम का बेटा लिखा है परन्तु वह भीम का बेटा नहीं था; जेत का बेटा, बल्हणदेव का पोता और पृथ्वीराज के बेटे गोबिन्द-

फिर उसके वंश में हरिश्चन्द्र हुआ वह आगरे में और उसका * बेटा † गोपाचल में रहा जिनके सात बेटे कृष्ण-चन्द्र, उदारचन्द्र, रूपचन्द्र, बुद्धिचन्द्र, देवचन्द्र, प्रबोध-चन्द्र और सूरजचन्द्र हुए जो ‡ शाह के सेवक थे लड़ाई

राव का परपोता था। हमारे खोज करके निकाले हुए शिलालेखों के संग्रह में बल्हणदेव और जेत के समय के दो शिलालेख सम्बत् १२७२ और १३४५ के हैं और हम्मीर का बनाया हुआ एक संस्कृत ग्रन्थ शृंगारहार नाम मिला है जो गानविद्या का है पर उसमें संवत् नहीं लिखा है। हम्मीर संवत् १३५८ में दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी से अपने एक शरणागत मुसलमान के वास्ते जो बादशाह का बाग़ी था, बड़ा भारी शाका करके रणथंभोर के किले पर काम आया, जिसकी बाबत अब तक यह कहावत कि "तिरियातेल हमीरहठ चढ़ै न दूजी बार" चली जाती है।

* पद में इसका नाम नहीं दिया है बाबू हरिश्चन्द्र के विचार में रामचन्द्र होगा जिसको वैष्णव लोगों ने अपनी रीति के अनुसार रामदास कर लिया है; हम भी इसमें सहमत हैं।

† ग्वालियर के किले का पुराना नाम है, जो ग्वालियर के शिलालेखों में आता है।

‡ शाह का नाम भी नहीं कहा है। बाबू हरि-

करके ब्रह्मलोक को गये और सातवां मैं अन्धा मतिमन्द सूरजचन्द्र रहा था सो एक दिन कूप में गिर पड़ा किसी ने मेरी पुकार नहीं सुनी। सातवें दिन यदुपति अर्थात् श्रीकृष्ण भगवान् ने मुझे निकाला आंखें खोल दीं और कहा कि हे पुत्र! जो चाहिये सो वर मांग। मैंने कहा कि हे प्रभु! भक्ति और शत्रु का नाश चाहता हूं और आपको देख कर दूसरे का रूप न देखूं।

इचन्द्र जी इस लड़ाई के विषय में यह नोट देते हैं कि उस समय तुगलकों और मुगलों का युद्ध होता था और ये लोग तुगलकों के नौकर थे पर मेरा मत इसके विरुद्ध है, क्योंकि सूरदासजी अकबर के समय में थे, उनके छः भाई जिस लड़ाई में मारे गये वह पठानों और मुगलों में अकबर के पिता हुमायूं या पितामह बाबर से हुई होगी और ये लोग लोदी वा सूर पठानों के, जो मुगलों से पहिले हिन्दुस्तान की बादशाही करते थे, नौकर रहे होंगे जिससे सूरदासजी ने भगवान् से वैरियों अर्थात् मुगलों के नष्ट होने की प्रार्थना की थी और भगवान् ने दक्षिण के प्रबल ब्राह्मणों से उनका नाश होना बताया था सो इस भविष्यवाणी के सत्य होने की विधि इस बात से मिलती है कि मुगलों का विशाल राज्य अन्त में पूना के पेशवाओं से नष्ट भ्रष्ट हुआ जो कोकनस्थ ब्राह्मण थे।

यह सुन कर करुणासिन्धु प्रभु ने कहा कि ऐसाही होगा। दक्षिण के प्रबल विप्रकुल से शत्रु का नाश होगा तेरी बुद्धि और विद्या निश्चल रहेगी।

यह कह कर मेरा नाम सूरजदास और सूरश्याम * रखा।

फिर पिछली रात को (भगवान्) अन्तर्धान हो गये; मैं व्रज में बसा और गुसाईं (विट्ठलनाथजी) ने अष्टछाप में मेरी थापना की। मैं पृथुयज्ञ का विप्र नन्द-नन्दनजी का मोल लिया हुआ गुलाम हूं।"

सूरदासजी ने इस तरह अपना संक्षिप्त वृतान्त अष्टछाप में प्रविष्ट होने तक का कह कर अपने को पृथुयाग का विप्र और ब्रह्मराव के कुल में चन्द का वंशज बताया है और ब्रह्मभट्टप्रकाश में जो भट्ट लोगों की उत्पत्ति का ग्रन्थ है ऐसाही लिखा * है। इस जाति के पढ़े लिखे लोग अपने को ब्रह्मभट्ट कहते हैं और लौकिक में भाट कहे जाते हैं। ३०। ३५ वर्ष पहिले मैंने भी एक प्रतिष्ठित राव से जो जम्बू की तरफ से टौंक

---

* ब्रह्मभट्टप्रकाश ग्रन्थ में साहित्यलहरी के पृष्ठ १०७ से जो पद उद्धृत किया गया है उसमें ऊपर लिखे पद की ५ तुकेंही हैं, ४ तुकें तो प्रथम पृथु० से भूप पृथ्वीराज तक हैं और पांचवी अन्त की तुक विप्रपृथु वाली है।

में आया था यह बात सुनी थी कि ये ३ महाकाव्य राव लोगों के बनाये हुए हैं।

१—पृथ्वीराज रासा।

२—सूरसागर।

३—भाषा महाभारत जो काशी में बनी है।

मैंने बूंदी के विख्यात कविराव गुलाबसिंहजी से भी इस विषय में पूछा था उन्होंने आषाढ़वदि १ संवत् १९५६ को यह उत्तर दिया कि सूरदासजी को मैं भी ब्राह्मण ही जानता था परन्तु राज्य के काम को रीवां गया था वहां के सब कवीश्वर मेरे पास आते थे उन्होंने कहा कि सूरदासजी राव थे इससे मुझको सन्देह हुआ तो उन्होंने सूरसागर की पुस्तक लाकर एक पद दिखाया; उसमें यह चन्द के परिवार में निकले फिर उदयपुर में मोहन लालजी ने साँवलदासजी के ग्रन्थ * का खण्डन लिखा उसमें मुझ से पुराने राव लोगों की महिमा पूछी मैंने उनको पत्र भेजा उसमें सूरदासजी को चन्द की सन्तान में लिखा और सूरसागर के पद का पता लिख भेजा। उनको मिल गया; उन्होंने † अपनी पुस्तक में जो लिखा है उसकी नकल भेजता हूं।"

---

* 'पृथ्वीराजरासा का खण्डन' इसकी एक प्रति कवि राजा सांवलदासजी ने मेरे पास भी भेजी थी।

† पृथ्वीराजरासा का संरक्षण। यह पुस्तक पंड्या

यह नकल भी साहित्यलहरी के उसी ऊपर लिखे पद की थी इसलिये फिर कविरावजी की सेवा में सूर-सागर के पद की नकल भेजने की प्रार्थना की गई उन्होंने भादों सुदि २ सम्वत १९५८ के कृपापत्र में लिखा कि सूर-सागर मेरे पास नहीं है मैंने तो रीवां में देखा था।

सूरसागर बड़ा ग्रन्थ है उसमें विना पते के किसी पद का मिलना दुस्तर है और सूरदासजी के दूसरे ग्रन्थ से उनके वंश का प्रमाण मिलही चुका है वही वहुत है। हां जो उसमें कुछ न्यूनता है तो इतनी ही है कि प्रथम तो सूरदासजी ने अपने पिता का नाम नहीं लिखा है। दूसरे अष्टछाप में प्रविष्ट होने का प्रसंग भी नहीं जताया है सो इन दोनों बातों का पता लगाने के लिये आईन अकबरी * और चौरासीवार्ता से वहुत सहायता मि-लती है।

मोहनलालजी की भेजी हुई मेरे भी पास है परन्तु उसमें सूरसागरवाला पद नहीं है, वही साहित्यलहरी का है जो हम ऊपर लिख आये हैं।

* मुसलमानों के सम्पूर्ण समय का यही एक ग्रन्थ है जिसमें हिन्दुओं की प्रत्येक वस्तु प्रत्येक वात और प्रत्येक सुयोग्य वादशाही-आश्रित हिन्दू का पता लगता है।

आईनअकबरी अकबर बादशाह के समय में उनके वजीर शेख़ अबुलफ़ज्ल † नागोरी ने बनाई है और चौरासीवार्ता के कर्ता गोस्वामी विट्ठलनाथजी के बेटे और स्वामी वल्लभाचार्य्यजी के पोते गोस्वामी गोकुलनाथजी ‡ हैं। ये दोनों ग्रन्थकार सूरदासजी के सम्कालीन थे।

---

† शेख़ अबुलफ़ज़ल बड़ा निर्द्वेषी विद्वान् था, उसकी बुद्धि निर्मल थी, उसने हिन्दुओं के धर्म्म और शास्त्रों के जानने में इतनी विद्वत्ता प्राप्त कर ली थी जो उसके पहिले किसी मुसलमान पण्डित ने नहीं की थी और न उसके पीछे। जिन महाशयों को हमारा लेख प्रमाण न हो वे आईनअकबरी के तीसरे दफ़्तर को पढ़ें और फिर इस बात का अनुमान करें कि ऐसी गहरी दृष्टि हिन्दुओं के षट्दर्शन और धर्म्म शास्त्रादि पर मुसलमानों में से और भी किसी ने डाली है या नहीं।

जैसे कि अब योरप के विद्वान् निर्णय करके इस बात को मानने लगे हैं कि प्राचीन समय में हिन्दुओं के बराबर कोई जाति सभ्य और शिष्ट नहीं थी वैसाही सारांश शेख़ अबुलफ़ज़ल ने भी अपने समकालीन और बादशाह के आश्रित पण्डितों के सत्संग और शास्त्रों के ज्ञान से निकाल लिया था।

‡ गोकुलनाथजी का जन्म सम्वत् १६०८ में हुआ था।

सूरदासजी के पिता बाबा रामदास।

आईन अकबरी से जाना जाता है कि सूरदासजी के पिता बाबा रामदास ग्वालेरी थे क्योंकि जहां बादशाही गवैयों की सूची लिखी है वहां पहले नाम बाबा रामदास ग्वालेरी का, और फिर उनके बेटे सूरदास का है और ग्वालियर में अपने बाप का बसना आप सूरदासजी साहित्यलहरी में लिख चुके हैं जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं।

बाबा रामदास बड़े गवैये थे।

फ़ारसी ग्रन्थ * मुन्तख़िबुल तावारीख़ में भी रामदास का नाम उस स्थान पर आता है जहां अकबर बादशाह के महामन्त्री ख़ानख़ानां बेरामखां के प्रतिकूल होने का वृत्तान्त लिखा है और यह बात सम्वत् १६१८

---

* यह ऐतिहासिक ग्रन्थ अकबर बादशाह के समय में बना है; इसमें हिन्दुस्तान के मुसलमान बादशाहों का इतिहास, सुलतान-महमूदग़ज़नवी से लेकर अकबर बादशाह के ४० वें वर्ष तक का है और अकबर का वह हाल जो अबुलफ़ज़ल ने पक्षपात से नहीं लिखा था इस ग्रन्थ से मालूम होता है क्योंकि मुल्ला अबुलक़ादिर को अकबर से मतविरोध भी था।

की है। हम यहां उस ग्रन्थ के लेख का यथावत् अनुवाद करते हैं।

ख़ानख़ानां ने इसी प्रकार ख़ज़ाने में कुछ नहीं होने पर भी एक लाख टके का रोकड़ और माल बाबा रामदास लखनवी को दिया जो सलीमशाह के कलावतों में से था और जिसको राग में दूसरा तानसेन कहना चाहिये; वह सभा में और एकान्त में ख़ान के पास रहा करता था और ख़ान उसके गाने से आंखों में आंसू भर लाता था।

इस लेख में केवल लखनवी का शब्द आईन अकबरी के विपरीत है, समय और गानविद्या का अभ्यास आईन अकबरी से मिलता हुआ है सो क्या आश्चर्य है कि या तो लखनवी ग्वालेरी की जगह भूल से लिखा गया होगा या बाबा रामदास ने समय की प्रतिकूलता वा अन्नजल की आधीनता से लखनऊ में कुछ समय तक रह कर कालक्षेप किया हो।

इन लेखों से पाया जाता है कि बाबा रामदास पहिले सूर बादशाह सलीमशाह के पास रहते थे फिर ख़ानख़ानां बैरामखां के पास रहे निदान अकबर बादशाह के नौकर हुए।

अष्टछाप।

अष्टछाप वल्लभकुल संप्रदाय के ८ महान् कवियों के समुदाय का नाम है; इनमें ४ अर्थात् सूरदास, कुंभनदास,

परमानन्ददास, और कृष्णदास तो वल्लभाचार्यजी के; और छीतस्वामी, गोविन्ददास, चतुर्भुजदास, तथा नन्द-दास, गोस्वामी विठ्ठलनाथजी के शिष्य थे।

सूरदासजी के शिष्य होने की कथा जो चौरासी वार्ता में लिखी है उसका यह सारांश है कि एक वेर वल्लभाचार्यजी गांव * अडेल से व्रज पधारते हुये † गऊ-घाट पर ठहरे वहां सूरदासजी का स्थल था और सूर-दासजी ‡ स्वामी थे, गाना अच्छा जानते थे इस हेतु से वहुत लोग उनके सेवक हो गये थे, वे वल्लभाचार्यजी के दर्शन को आये उन्होंने आदर देकर वैठाया और कुछ भगवद्यश सम्वन्धी गाना सुनाने को कहा तो सूरदासजी ने अपने वनाये हुये ये दो पद धनाश्री के सुनाये।

---

* अडेलगांव प्रयाग के परगने में था जहां श्री १०८ वल्लभा-चार्य जी रहते थे और उनके कई पुत्रों का जन्म हुआ था।

† यह स्थान आगरे और मथुरा के वीच में यमुना जी पर था।

‡ सूरदासजी और उनके पिता का स्वामी होना और प्रमाणों से भी पाया जाता है। स्वामी हो जाने का कारण सूरदासजी के ६ भाइयों के मारे जाने और घरवार लुट जाने का था और स्वामी हो करही उन्होंने गान-विद्या सीखी होगी।

हो हरि सब पतितन को नायक ।
को करि सकै बराबरि मेरी इते मान को लायक ॥ १ ॥
जो तुम अजामेल सों कीनी जो पाती लिख पाऊं ।
होय विश्वास भलो जिय अपने और पतित बुलवाऊं ॥ २
सिमटे जहां तहां तें सब कोउ आय जुरे इक ठौर ।
अब के इतने आन मिलाऊं बेर दूसरी और ॥ ३ ॥
होड़ाहोड़ी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट ।
सबहिन लै पायन तरि परिहौं यही हमारी भेट ॥ ४ ॥
ऐसे कितने कहो बताऊं तुमरन है भयों आड़ो ।
अबकी बेर निवार लेउ प्रभु सूर पतित को टांडो ॥ ५ ॥

प्रभु मैं सब पतितन को टीको ।
और पतित सब द्यौस चार के मैं तो जन्मतही को ॥ १ ॥
बधिक अजामिल गनिका तारी और पूतनाही को ।
मोहि छांड तुम और उबारे मिटै शूल कस जी को ॥ २ ॥
कोउ न समरथ सेव कारन को खैंचि कहत हौं लीको ।
मरियत लाज सूर पतितन में कहत सबन में नीको ॥ ३ ॥

वल्लभाचार्यजी ने सुन कर कहा कि सूरदासजी तुम सूर हो कर इतने घिघियाते क्यों हो कुछ भगवत् लीला का वर्णन करो । सूरदासजी ने कहा मैं तो कुछ समझता नहीं हूं ।

आचार्यजी ने कहा अच्छा तुम स्नान कर आओ हम तुम्हें समझावेंगे ।

सूरदासजी जाकर स्नान कर आये और आचार्यजी ने उनसे श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध की अनुक्रमणिका कही, उसी दिन से वे उन भावों के पद बनाने लगे और आचार्यजी के साथ गोकुल में चले आये।

चौरासीवार्ता में तो गोस्वामी विट्ठलनाथजी का सूरदासजी को अष्टछाप में मिलाना नहीं पाया जाता परन्तु जब सूरदासजी ही उसका वर्णन करते हैं तो उसके सही होने में कुछ शंका भी नहीं हो सकती। क्या आश्चर्य है कि जो गोस्वामीजी ही ने उनको काव्य-रचना में अद्वितीय देख कर ऐसा किया हो।

सूरदासजी का अकबर के दरबार में जाना।

आईनअकबरी से तो मालूम होता है कि बाबा रामदास और सूरजदास दोनों बाप बेटे बादशाही गवइयों में नौकर थे पर नौकर होने की कोई तिथि उसमें नहीं लिखी है तौ भी अटकल से ऐसा जाना जाता है कि बैरामखां के मरे पीछे या कुछ पहिले जब उसका काम बिगड़ा जिससे उसके नौकर और आश्रित लोग बादशाही सरकार में नौकर हो गये तो ये भी उस गुणग्राहक बादशाह की सेवा में आ रहे होंगे, क्योंकि यह एक बँधी हुई बात है कि जहां कुछ ग्राहकी होती है वहीं गुणी लोग हरतरफ से आकर इकट्ठे हो जाते हैं; धनवानों की चाहना सब ही प्रकार के गुणियों को होती है।

रामदास के पीछे उनका मनसब सूरदासजी को मिला होगा जैसा कि बादशाही कायदा था कि बाप की जगह बेटे को मिल जाती थी और फिर कुछ समय पीछे विरक्त होकर बादशाही सेवा से अलग हो गये हों या कभी २ हाज़िरी देकर अपनी तनख्वाह ले आते हों। इस व्यवस्था में तो उनका बादशाही दरबार में जाना आना कोई नया काम नहीं था; पर चौरासीवार्ता में यह बात इस प्रकार से वर्णन की गई है कि मानो शाही दरबार में कुछ अगला सम्बन्धही नहीं था, और वे अपनी गानविद्या की प्रशंसा प्रसिद्ध होने से पहिलीही बार दरबार में बुलाये गये थे।

यह बात चौरासीवार्ता में यों लिखी है कि देशाधिपति (अकबर बादशाह) ने सूरदासजी की कविता के बखान सुन कर उनको अपने पास बुलाया और कुछ सुनाने को कहा तो सूरदास ने अपना बनाया यह पद गाकर सुनाया।

मन रे करु माधो से प्रीति।

बादशाह ने इसको सुन कर अपनी प्रशंसा में भी कुछ कहने की इच्छा प्रकट की तब सूरदासजी ने फिर यह पद गाया।

नाहिन रह्यो मन में ठौर।
नन्दनन्दन अछत कैसे आनिये उर और॥

चलत चितवत दिवस जागत सुपन सोवत राति।
हृदय तें वह मदन मूरति छिन न इत उत जाति॥
वाहत कथा अनेक ऊधो लाख लोभ दिखाइ।
कह। करौं चित प्रेमपूरण घट न विन्दु * समाइ॥
श्याम गात सरोज आनन ललित गति मृदु हास।
सूर ऐसे दरस कारन मरत लोचन प्यास॥ १॥

बादशाह ने कहा "सूरदासजी! जब तुम्हारी आखें कुछ देखतीही नहीं हैं तो फिर कैसे ऐसे दर्शन के वास्ते प्यासी मरती हैं।"

सूरदासजी ने इसका कुछ जवाब नहीं दिया; तब बादशाह ने दिल में समझ लिया कि इनकी आखें यहां तो कुछ देखती नहीं हैं, वहां जैसा कुछ देखती हैं वैसा ही वर्णन करती हैं।

फिर बादशाह के दिल में यह इच्छा हुई कि इनको कुछ दें परन्तु इनको किसी बात की चाहना न देख कर चुप हो रहे और ये भी बादशाह से विदा हो कर श्रीनाथद्वार अर्थात् श्रीगोवर्द्धन में चले आये।

जोधपुर के कविराज मुरारीदानजी ने अकबर बादशाह की सभा में सूरदासजी के जाने की बात मुझ से कही थी, यदि उसको चौरसीवार्ता में लिखी हुई कथा की टीका समझें तो कुछ असम्भव नहीं।

ये महाशय मारवाड़ के इतिहासवेत्ता और श्री-

* पाठान्तर सिन्धु भी है।

महाराज। साहिब जोधपुर के कविराजा हैं इनको बहुत सी पुरानी बातें याद हैं। इसलिये क्या आश्चर्य है कि उन्होंने जो बात कही है वह सही हो।

वह बात यह है कि अकबर बादशाह ने सूरदासजी की प्रशंसा सुन कर मथुरा के हाकिम को उनके भेजने के वास्ते हुक्म लिखा, मगर सूरदासजी ने जाना स्वीकार नहीं किया। हाकिम भला आदमी था उसने बुद्धिमानी से कई बड़े २ आदमियों को जो सूरदासजी के सेवक थे बुला कर कहा कि सूरदासजी के न जाने से मेरी हाकिमी जाती रहेगी क्योंकि जब बादशाह यह विचार करेगा कि भला हाकिम हुआ जिसकी बात एक फ़क़ीर भी नहीं मानता तो मुझको दूर करके दूसरा हाकिम भेज देगा और वह शायद आप लोगों को भी सुख से नहीं रहने दे इसलिये जो अपना और मेरा भला चाहते हैं तो महाराज सूरदासजी को समझा कर बादशाह के पास भेजवा दें।

उन लोगों ने सूरदासजी से कहा कि महाराज आपको तो बादशाह की परवा नहीं है। परन्तु यह हाकिम हम लोगों को बहुत सुख देता है आपके न जाने से बादशाह अवश्य इस को हाकिमी से उतार देगा और दूसरा हाकिम भेजेगा वह यदि ऐसा भलामानस

न हुआ तो हम सबको दुःख हो जावेगा यह भी आप विचार लेवें।

सूरदासजी ने कहा कि अच्छा तुम यह तो पूछो कि बादशाह हमको बुलाता क्यों है, हाकिम ने उनको बादशाह का पर्वाना दिखाया जिसमें लिखा था कि हमने सुना है कि वृन्दावन में सूरदास बड़ा कवि और गवैया है उसको हमारे पास भेज दो।

सूरदासजी को जाना पड़ा, बादशाह उस समय सीकरी में रहते थे खबर पातेही उन्होंने सूरदासजी को बुला लिया और गाने का हुक्म दिया। सूरदासजी ने तमूरा मिला कर एक पद इस ढंग से दिल खोल कर गाया कि बादशाह उसके सुनने में लवलीन हो गये वह पद यह था।

पद।

सीकरी में कहा भगत को काम।
आवत जात पन्हैया फाटी भूलि गयो हरि नाम।
जाको मुख देखे हू पातक ताहि कस्यौ परनाम॥
फेर कबौं ऐसौ जन करियो सूरदास के श्याम।
सीकरी में कहा भगत को काम।

जब गा चुके तो बादशाह ने कहा कि मैंने आपकी दो बातों की तारीफ़ तो सुनी थी कि कवि भी हो और गाते भी अच्छा हो मगर तीसरी बात यह अब मालूम

हुई कि फ़कीर भी हो ! उसी दम एकसदी * मनसव देने का हुक्म दिया ।

सूरदासजी ने कहा कि मैं फ़क़ीर हूं मनसव को क्या करूंगा । बादशाह ने कहा कि मैं भी बादशाह हूं जब आपने अपनी फ़क़ीरी की आन नहीं छोड़ी तो मैं अपनी बादशाही की आन कैसे छोड़ सकता हूं यह मनसव तो आपको लेनाही होगा । आप इसकी आमदनी ख़ैरात कर देना । सूरदासजी को चुप हो कर मनसव लेना ही पड़ा ।

यदि हम इस वृत्तान्त से यह सिद्ध करने की चेष्टा करैं कि सूरदासजी के बाप रामदासजी बादशाही नौकर थे और सूरदासजी को गानविद्या में परिपूर्ण होने से बादशाह ने बुलाया और आग्रह करके मनसव दिया जिसका यह फल हुआ कि उनका नाम आईन अकबरी में लिखा गया तो कुछ अघटित न होगा ।

आईन अकबरी में सूरदासजी का नाम गवईयों की श्रेणी में लिखे जाने का कारण यही है कि उन्होंने गान-विद्या के द्वाराही बादशाही दरबार में पहुँचने की प्रतिष्ठा

---

* एक सदी मनसव की तनखाह पहिले दरजे में ७००) दूसरे दरजे में ६००) और तीसरे दरजे में ५००) मासिक होती थी ।

प्राप्त की थी। जो किसी दूसरी विद्या के प्रसंग से मिले होते तो उस श्रेणी में लिखे जाते जो पुरुष जिस योग्यता का था वह उसी श्रेणी में लिखा गया है जैसे राजा और मन्त्री अमीरों और मनसबदारों के वर्ग में लिखे गये हैं; शास्त्री शास्त्रियों में, पण्डित पण्डितों में, वैद्य वैद्यों में इत्यादि।*

---

* आईन अकबरी में विद्वानों के भी कई वृन्द हैं जिनमें पहिले मुसलमानों के नाम लिखे हैं फिर हिन्दुओं के और कहीं बीच २ में भी। उत्तमवर्ग के विद्वानों में इतने हिन्दू बहुश्रुतों के नाम हैं।

१–माधवसरस्वती २–मधुसूदन ३–नारायणाश्रम
४–हरजेश्वर ५–दामोदरभट्ट ६–रामतीर्थ
७–नरसिंह ८–ब्रह्मेन्द्र ९–आदित्य।

सिद्धों में इतने हैं।

१–बाबा विलास। २–बाबा कपूर। ३–रामभद्र।
४–जैद्रूत (जदरूप।)

शास्त्री इतने लिखे हैं।

१ नारायण २ श्रीभट्ट ३ माधव ४ विश्वनाथ (विष्णुनाथ) ५ रामकृष्ण ६ बलभद्रमिश्र ७ वासुदेवमिश्र ८ वाहन (वामन) भट्ट ९ बुद्धिनिवास १० गौरीनाथ ११ गोपीनाथ १२ कृष्ण पण्डित १३ भट्टाचार्य १४ भागीरथ भट्टाचार्य १५ काशीनाथ भट्टाचार्य।

भक्त और वे लोग जो भक्तों के विशेष भाविक हैं आईन अकबरी के लेख पर विश्वास नहीं रखते किन्तु सूरदासजी की मानहानि मानते हैं और आईन अकबरी के कर्ता पर बहुतही गुस्सा छांटते हैं कि उसने सूरदासजी को बाबा रामदास का बेटा और गवैया लिख † दिया है पर इसमें उसका कुछ अपराध नहीं है क्योंकि दोनों बाप बेटे गवैये थे और ग्वालियर में रहने से बाबा

हकीमों में इतने वैद्य हैं।

१ महादेव २ भीमनाथ ३ नारायण ४ शिवजी।

नकली कलाम पढ़नेवाले अर्थात् स्मार्तकों में ये दो नाम हैं।

१—विजयसेन सूर २—निहालचन्द्र (भानचन्द्र)

गानेवालों में इन ४ महाशयों के नाम हैं।

१—बाबा रामदास ग्वालेरी गोयंदा (गवैया।)

२—नायक जरजू * ग्वालेरी गोयंदा (गवैया।)

३—सूरदास बाबा रामदास का बेटा गो० (गवैया।)

४—रंगसेन आगरेवाला।

कई नामों में भ्रांति फारसी लिपिसे हो गई है कि किसी प्रति में तो विश्वनाथ है और किसी में विष्णु-नाथ इत्यादि।

† देखो तुलसीरामजी की भक्तमाल।

---

* मूल में तो जरजू है कोई सरजू भी कहते हैं।

रामदास ने गाने में उतनी कुशलता प्राप्त कर ली थी किस लिये कि ग्वालियर उस समय संगीत का घर बना हुआ था। सूरदासजी भी पिता से गानविद्या सीखे थे और गवैयापनही उनका अकबर जैसे चक्रवर्ती बाद-शाह तक पहुँचने और उससे मान पाने का कारण हुआ था।

बाबा रामदास को बादशाही नौकर मान लेने में तो ऐसे लोगों को उज्र न होगा परन्तु सूरदासजी के वास्ते ज़रूर कहेंगे कि जिसने परमेश्वर से यह वर मांगा था कि मैं आपकी भक्ति करूं और आप बिना और किसी का मुँह नहीं देखूं, वह कैसे एक यवन का नौकर हो सकता था उसके लिये तो भगवद्भक्तिही बहुत थी। सो इसका यह उत्तर हो सकता है कि भक्तमाल में बहुत ऐसे भक्त लिखे हैं जो अपना २ धन्दा करते थे। उसी प्रकार से क्या आश्चर्य है कि जो सूरदासजी भी अपने पिता के जीते जी या पीछे बादशाही नौकर रहे हों यदि ऐसा न हुआ होता तो आईन अकबरी में उनका नाम क्यों लिखा जाता। गुसाईं तुलसीदास और कवि केशवदास भी तो उसी समय में थे परन्तु उन्होंने बादशाही नौकरी नहीं की जिससे उनका नाम हिन्दू नौकरों की सूची में नहीं लिखा गया।

सूरदासजी कब से कब तक नौकर रहे यह पता

आईन अकबरी से नहीं लगता परन्तु वह सूची अकबरी सन् ४० अर्थात् सम्वत् १६५१ तक की है। अकबर बादशाह का राज्याभिषेक सम्वत् १६१२ में हुआ था। इसलिये इन ४० वर्षों के अन्दर कभी न कभी सूरदासजी बादशाही नौकर रहे होंगे, हमारी समझ में तो आईन अकबरी में जो लिखा है किसी तरह दूषित नहीं है और न उसके सही होने में कुछ सन्देह है। सूरदासजी को उसमें गवैया लिखा है वह भी वृथा नहीं है और न कभी किसी भक्त को अपना उद्यम करने में लज्जा आती थी और न कभी आवेगी क्योंकि सदा से भक्तों की यही वृत्ति रही है कि 'हरिभजें और अपना काम न तजें' देखो कबीर जी कपड़ा बुनते थे नामदेव जी छींट छापते थे दादूजी रूई पींजते थे, रैदास जूते गांठते थे सदन कसाई मांस बेचते थे, हां यह हो सकता है कि सूरदासजी ने नौकर होने के पीछे नौकरी छोड़ दी हो और ब्रज में जा बसे हों; जहां अन्त समय तक गोवर्द्धन ग्राम में रहे हों।

सूरदासजी का अन्त काल।

चौरासीवार्ता में लिखा है कि जब सूरदासजी का अन्त समय आया तो वे गोवर्द्धन से गांव परासोली में गये और वहां श्री नाथजी के मन्दिर की ध्वजा को दण्डवत करके धरती पर लेट रहे, जब गोवर्द्धन में गोस्वामी जी ने मामूली समय पर उनको कीर्तन करते (भजन गाते)

नहीं देखा तो पूछा कि आज सूरदास क्यों नहीं आये। एक वैष्णव ने कहा कि उनको तो मैंने परासोली की तर्फ जाते देखा था! गोस्वामीजी ने उसी वक्त अपने सेवकों को ख़बर लाने के लिये भेजा और राजभोग के पीछे आप भी गये तो सूरदासजी को देख कर पूछा कि 'सूरदास जी कैसे हो?' सूरदासजी ने कहा-'महाराज आइये मैं आपकी ही बाट देखता था' यह कह कर नीचे लिखा पद गया।

राग संरग।

लखो हरि जू को एक सुभाय।
अति गंभीर उदार उदधि प्रभु जानि सिरोमनिराय ॥१॥
राई जितनी सेवा को फल मानत मेरु समान।
समुझि दास अपराध सिन्धु सम बूंद न एको जान ॥२॥
वदन प्रसन्न कमलपद-सन्मुख दीखतही है ऐसो।
ऐसे विमुखहु भये सुमुख-छबि जब देखौ तब तैसो ॥३॥
भक्तविरह-कातर करुणामय डोलत पाछे लागे।
सूरदास ऐसे प्रभु को कत दीजत पीठ अभागे ॥ ४ ॥

फिर गोस्वामीजी ने पूछा कि सूरदासजी आंखों की वृत्ति कहां है तो सूरदासजी ने यह पद गाया।

राग विहाग।

खंजन नैन रूप-रसमाते।
अतिसै चारु चपल अनियारे पलपिँजरा न समाते ॥

चलि चलि जात निकट श्रवनन के उलट पुलट ताटंक* फँदाते
सूरदास दरसन-गुण अटके नातरु अव कव के उड़ि जाते।"

इस पद को समाप्त करतेही सूरदासजी का प्राण पखेरू काया-रूपी पिंजरे से प्रयाण कर गया और गोस्वामीजी लौट कर गोवर्द्धन में आ गये।

इस तरह ऊपर लिखी पुस्तकों के थोड़े से अक्षरों में सूरदासजी की लंबी चौड़ी जीवनी की समाप्ति हो जाती है जिसका बहुत कुछ हाल लिखने योग्य था, मगर समकालीन लेखकों ने नहीं लिखा और न कोई तिथि उनके जन्म और मरण की लिखी, जिससे विद्वानों को अटकल के घोड़े दौड़ाने पड़ते हैं।

सूरदासजी के नाम एक पत्र।

हम सूरदासजी के जीवित काल का लेखा लगाने से पहिले एक पत्र का उलथा यहां लिखना उचित समझते हैं जो मुनशियात † अबुलफ़जल के दूसरे दफ्तर के

---

* कानों का गहना।

† यह बड़ा उपयोगी संग्रह अकबर बादशाह के उसी वज़ीर और मीर मुनशी शेख अबुलफ़ज़ल के लेखों का है जिसने आईनअकबरी रची है इन लेखों को उसके भानजे अबदुलसमद ने सम्वत् १६६३ में बड़े परिश्रम से एकत्र किया था इसमें तीन दफ्तर अर्थात् कांड हैं।

पहिले में, बादशाह के पत्र ईरान, तूरान, योरप,

अन्त में दिया हुआ है जिसके प्रारम्भ में लिखा है कि यह पत्र सूरदास के नाम है जो बनारस ‡ में था।

इस पत्र * के आरम्भ में बादशाहों की प्रशंसा करके लिखा है कि परमेश्वर के जाननेवाले ब्राह्मण और जङ्गलों में रहनेवाले योगी तथा सन्यासी भी बादशाहों के शुभ-चिन्तक और भक्त होते हैं और बादशाह भी स्वमत का पक्षपात छोड़ कर इन भगवत् सखाओं की आज्ञा पालते हैं और उन बादशाहों का तो कहनाही क्या है जो धर्म्मराज भी हों और अब तो हज़रत बादशाह (अकबर) की बादशाही का समय आ पहुँचा है। परमेश्वर ने जब इनको धर्म्मराज बनाया है तो हम लोगों

के बादशाहों मक्के मदीने के महन्तों और दूसरे अमीरों के नाम हैं।

दूसरे दफ़तर में, अबुलफ़जल के वे पत्र हैं जो उसने अपनी तर्फ़ से लिखे थे।

तीसरे दफ़तर, में अबुलफ़जल के और लेख तथा रिव्यू समालोचनादि हैं।

‡ सूरदासजी उस समय बनारस में होंगे।

* यह पत्र छपी हुई प्रति में नहीं है मेरे पास एक हस्तलिखित प्रति मेरे पिताजी की सन् १२५० हिजरी, सम्वत् १८९२ की है उसमें है।

से इनकी क्या स्तुति हो सकती है परन्तु बहुत में से जो कुछ थोड़ा सा मेरी समझ में आया है वह यह है कि जैसे परमात्मा ने प्राचीन समय में रामचन्द्र को जन समुदाय में से चुन कर सत्य समझने की बुद्धि प्रदान की थी वैसेही आज वह परमपद † इस महात्मा को बख़्शा है लेकिन अन्तर इतनाही है कि रामचन्द्र एक ऐसे समय में थे कि जब दया और धर्म की प्रवृत्ति थी और सतयुग था आज कलिजुग है और यह ऐसा सद्गुरु इसी समय में है जिसमें इतनी बुद्धि और वाक्यशक्ति है कि जो इस जगत्गुरु के असाधारण गुणों को समझे और कहे। पृथ्वी पर्वत, बन, और बस्ती के समग्र निवासियों का यह कर्तव्य है कि इस श्रीमान् की आज्ञा को ईश्वर की आज्ञा समझ कर उसके पालन करने में परिश्रम करें।

मैं आपकी विद्या और बुद्धि का वृत्तान्त पहिले से सज्जनों और निष्कपट पुरुषों से सुना करता था और

---

† अकबर बादशाह ने भी अपना एक न्याराही पंथ इलाही मज़हब के नाम से चलाया था और अबुल-फ़ज़ल वग़ैरह जो उस पंथ को मानते थे अकबर को धर्म का अवतार समझते थे; अकबर के मत का सविस्तर वृत्तान्त किताब दबिस्तानुलमज़हब के अन्त में लिखा है जो मिर्ज़ा मुहसनफ़ानी ने शाहज़हां बादशाह के समय में बनाई है।

परोक्षही आपको मित्र मानता था; अब जो कई एक सीधे और सच्चे ब्राह्मणों से सुना कि आप इस समय के बादशाह के माहात्म्य और देव अंशी होने से परिचित होकर पूर्ण भक्त हो गये हैं इससे आपकी बुद्धि और तपस्या की पूरी परीक्षा हो गई है। ईश्वरभक्तों को सन्यासवेश में पहिचान लेना इतना कठिन नहीं है जितना कि गृहस्थाश्रम और रजोगुणी वेश में पहिचानना कठिन है। बहुत बुद्धिमान् ऐसे भी होते हैं कि ऊपर की बातों पर दृष्टि देकर भीतर के भेद से अभेदू रहते हैं।

हज़रत बादशाह शीघ्रही इलाहाबाद को पधारेंगे आशा है कि आप भी सेवा में उपस्थित होकर सच्चे शिष्य होवें और ईश्वर को धन्यवाद दें कि हज़रत भी आपको परम धर्मज्ञ जान कर मित्र मानते हैं और जब हज़रत मित्र मानते हैं तो इस दरगाह के चेलों और भक्तों का उत्तम बर्ताव मित्रता के अतिरिक्त और क्या होगा ईश्वर शीघ्रही आपके दर्शन करावे कि जिसमें हम भी आपकी सत्संगति और चित्ताकर्षक बचनों से लाभ उठावें।

यह सुनकर कि वहां का करोड़ी * आपके साथ अच्छा

---

* आईनअकबरी से जाना जाता है कि एक करोड़ दाम अर्थात् ढाई लाख रुपये की तहसील पर जो तह-

बर्ताव नहीं करता है हज़रत को भी बुरा लगा है और इस विषय में उसके नाम कोपमय फ़र्मान भी जा चुका है और इस तुच्छ शिष्य अबुलफ़ज़ल को भी आज्ञा हुई है कि आपको दो चार अक्षर लिखे; वह करोड़ी यदि आपकी शिक्षा नहीं मानता हो तो हम उसका काम उतार लें और जिसको आप उचित समझें जो दीन दुखी और सम्पूर्ण प्रजा की पूरी सँभाल कर सके उसका नाम लिख भेजें तो अर्ज करके नियत करा दूं। हज़रत बादशाह आपको खुदा से जुदा नहीं समझते हैं इसलिये उस जगह के काम की व्यवस्था आपकी इच्छा पर छोड़ी हुई है वहां ऐसा हाकिम (शासक) चाहिये कि जो आपके आधीन रहे और जिस प्रकार से आप स्थिर करें काम करै आप से यही पूछना है सत्य कहना और सत्य करना है। खत्रियों वगैरह में से जिस किसी को आप ठीक समझें कि वह ईश्वर को पहिचान कर (प्रजा का) प्रतिपाल करेगा उसी का नाम लिख भेजें तो प्रार्थना करके भेजूं। ईश्वर के भक्तों को ईश्वर सम्बधी कामों में अज्ञानियों के तिरस्कार करने का संशय नहीं होता है सो ईश्वर कृपा से आपका

सीलदार नियत होते थे वे करोड़ी कहलाते थे जिन महाशयों को अकबर बादशाह के मालगुजारी (लगान) आदि के प्रबंधों को जानने की चाहना होवे वे हमारे हिन्दी अकबरनामे में देख लें।

शरीर ऐसाही है, परमेश्वर आपको सत्कर्मों की श्रद्धा देवे और सत्कर्म के ऊपर स्थिर रक्खे और ज्जादा सलाम।

सूरदास के समय का निर्णय।

ऊपर के लेखों पर विचार करने से सूरदासजी का ऐतिहासिक जीवनकाल निरूपण करने के लिये नीचे लिखे प्रश्नों का प्रदुर्भाव होता है।

१—सूरदासजी के भाई किस बादशाह के आश्रित थे ?

२—सूरदासजी कूप में क्यों और कब गिरे ?

३—सूरदासजी वल्लभाचार्यजी के चेले कब हुए ?

४—बाबा रामदास को मुन्तखिबुलतवारीख़ में लखनवी क्यों लिखा है ?

५—बाबा रामदास किस प्रसंग से सलीमशाह के मुसाहिब (सभासद) हो गये थे ?

६—फिर वे बैरामखां ख़ानख़ानां से कब मिले ?

७—कब अकबर के नौकर हुए और कब तक रहे ?

८—सूरदासजी बाप के पास रहे या अलग ?

९—सूरदासजी अकबर बादशाह के पास कब गये ?

१०—अबुलफ़ज़ल ने सूरदासजी को पत्र कब लिखा था ?

११—वह पत्र इन्हीं सूरदासजी के नाम था वा अन्य सूरदासजी के नाम जो बनारस में रहते थे ?

१२—सूरदासजी का देहान्त कब हुआ ?

१३—सूरदासजी की बनाई हुई पुस्तकों से भी कुछ पता उनके समय का चलता है या नहीं ?

१४—सूरदासजी की उमर का सही अनुमान और उनके समय की बड़ी २ घटनाओं की सूची ?

ये ऐसे प्रश्न हैं कि पुरातत्ववेत्ता इनके प्रत्युत्तर प्रस्तुत करने में बहुत कुछ बाल की खाल उधेड़ सकते हैं पर हम भी अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार साहस करके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखते हैं।

१—सूरदासजी के भाई संभव है कि लोदी जाति के पठान बादशाहों के नौकर थे और मुगल-बादशाह बाबर के चढ़ आने पर दिल्ली के बादशाह इब्राहीम की सेवा में बाबर से लड़ कर वे लोग काम आये थे। यह दुर्घटना सन् ९३२ हिजरी अर्थात् सम्बत् १५८३ में हुई होगी जो बाबर बादशाह के विजयप्राप्ति, और लोदीपठानों की के संपत्ति समाप्त होने का वर्ष है।

२—बाबर बादशाह की जीत होने पर जो भागड़ पठानों और उनके आश्रितों में पड़ी थी उसी गड़बड़ में सूरदासजी जो अन्धे भी थे कुवे में गिर पड़े होंगे परन्तु यह दुर्घटना कहां हुई और वह कुँआँ किस ठौर था इसका कुछ वर्णन सूरदासजी ने भी स्पष्ट रूप से नहीं किया है, संभव है कि ग्वालियर या आगरे के आसपास ही कहीं ऐसा हुआ होगा। बाबर और इब्राहीम की

लड़ाई तो पानीपत में हुई थी पर सूरदासजी वहां क्यों गये होंगे उनके निवासस्थान वा उसके आस पास में गड़बड़ होने का यह फल हुआ होगा।

३—सूरदासजी श्री १०८ वल्लभाचार्यजी * के चेले सम्वत् १५८३ के पीछे और सम्वत् १५८७ के पहिले हुए होंगे क्योंकि सम्वत् १५८७ में तो श्री १०८ वल्लभाचार्य का स्वर्गवास हो गया था वे बहुधा ब्रज में रहा करते थे जहां सूरदासजी कुँवे से निकलने और विरक्त होने के पीछे रहने लगे थे जिसका प्रमाण चौरासीवार्ता में लिखे वृत्तान्त से मिलता है।

४—सम्भव है कि रामदासजी भी उसी बादशाह गर्दी की गड़बड़ में जान बचाने के लिये पूर्व के प्रान्तों में चले गये होंगे जहां आगरे से परे बङ्गाल तक उनके आश्रयदाता पठानों की अमलदारी थी और क्या आश्चर्य है कि जो उसी दशा में कुछ समय तक लखनऊ में भी रहे हों जिससे मुल्ला अब्दुलक़ादिर ने उन्हें मुन्तखिबुल-तवारीख़ में लखनवी लिख दिया है। गुणी लोग वैसे भी जन्मते कहीं हैं बसते कहीं और मरते कहीं हैं।

५—बाबा रामदास, सूर पठान सलीमशाह बादशाह के मुसाहिब लोदीपठानों के उसी प्रसंग से हुए थे जिसका परिचय ऊपर दिया जा चुका है।

---

* वल्लभाचार्यजी का जन्म सम्बत् १५३५ में हुआ था।

६—सूर पठानों का ऐश्वर्य अस्त होने के पीछे सम्वत् १६१२ में जब अकबर बादशाह का भाग्योदय हुआ और वेरामखां ख़ानख़ानां के गुण ज्ञान की कीर्ति देश देशान्तर में फैली तो रामदासजी उसके पास गये और उसने भी उनका यथोचित आदर सत्कार किया।

७—अकबर बादशाह की सरकार में रामदासजी के नौकर होने की ठीक तिथि तो किसी तवारीख़ में नहीं मिली, केवल आईनअकबरी में लिखी हुई गवैयों की सूची में उनका नाम लिखा मिलता है और ऐतिहासिक प्रमाण के लिये इतना लेखही बहुत कुछ है। सम्भव है कि बेरामखां का देहान्त होने पर वे बादशाही नौकर हुए होंगे और फिर सम्वत् १६२५ वा ३० तक उनका भी देहान्त हो गया होगा।

८—सूरदासजी का पहिले २ तो बाप के पास रहने और उनसे गानविद्या सीखने में तो सन्देह ही नहीं है बादशाह गर्दी और कुवे में गिरने के पीछे विशेष करके विलग रहना पाया जाता है। बाबा रामदास अपने ६ बेटों के मारे जाने से उदासीन होकर बहुधा पूर्व में और सूरदासजी ब्रज में रहे, शायद कभी मिले होंगे।

९—सूरदासजी के अकबर बादशाह से मिलने का स्थान चौरासीवार्ता में तो नहीं लिखा है मगर जिस

पद में सीकरी का नाम है और उसके प्रसंग में मनसब का भी वर्णन है उस पर से ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि सम्वत् १६२८ से सम्वत् १६४२ तक बीच के किसी वर्ष में मिले होंगे क्योंकि सीकरी में बादशाह इन्हीं १४। १५ वर्षों में रहे थे जिसका कारण यह था कि वहां शेख़ सलीम चिश्ती की दुआ से शाहज़ादे सलीम का जन्म † हुआ था और बादशाह ने उस स्थान को पुनीत और शुभ समझ कर राजगृह बना ‡ लिया था और मनसबों की प्रथा सम्वत् १६३१ से चली थी। इस लेखे से सम्वत् १६३१ के पीछे सूरदासजी का सीकरी में जाना हुआ होगा।

१०—पत्र के अन्त में मिती नहीं लिखी है जो इस पुस्तक में लिखे हुए कई पत्रों की समाप्ति पर देखी जाती है और न स्थान का नाम है कि जिससे जाना जाता कि अमुक मिती को अमुक स्थान से यह पत्र लिखा गया था परन्तु शेख़ अबुलफ़ज़ल अकबरी सन् (इलाही) के १९ वर्ष अर्थात् सम्वत् १६३१ में बादशाही नौकर हुआ था और इलाहाबाद * जहां बादशाह के

† आसोज बदि ५ सम्वत् १६२६

‡ भादों बदि ४ सम्वत् १६२८ को सीकरी के पास फतहपुर नाम नया शहर बसाकर बादशाह रहने लगे थे।

* बादशाह का बहुत दिनों से यह इरादा था कि

आने का विचार इस पत्र में प्रगट किया है इलाही सन् २८ (सम्वत् १६४०) में बसा था और शेख़ की मृत्यु सम्वत् १६५९ में हुई। सूरदास सम्वत् १६४२ के पहिले परम धाम प्राप्त हो चुके थे इस पर से कह सकते हैं कि वह पत्र

प्याग (प्रयाग) को जहां गङ्गा यमुना का मिलान होता है जिसको हिन्दू लोग बहुत बड़ा समझते हैं और जो यहां (हिन्दूस्थान) के तपस्वियों का तीर्थ है, एक बड़ा शहर बनावें और किला बना कर कुछ दिनों यहां रहैं जिससे उधर के दंगई लोग आधीन हो जावैं और समुद्र तक सुख और चैन हो जावे और यह भी मनोरथ था कि जब यह शहर बस जावे पूर्व के शहरों को नावें जाने आने लगें और उस देश के बागियों की जड़ उखाड़ दी जावे तो दक्षिण की ओर फौज बढ़ाई जावे और वह देश जो एक न्याई बादशाह का रस्ता देख रहा है न्यायशील राजाधिकारियों को सौंपा जावे और जब यह भारतवर्ष सुशील आज्ञाकारियों से बस जावे तो तूरान की तरफ़ चढ़ाई की जावें और मिर्ज़ा हकीम (बादशाह का छोटा भाई) को शिक्षा दी जावे जो खुशामदी मन्त्रियों के बहकाने से आज्ञा नहीं मानता है फिर मिर्ज़ा सुलेमान और शाहरुख़ को जो बदख़शां में फ़साद कर रहे हैं सीधा किया जावे जिससे बाप दादों का देश हाथ आवे और नाना प्रकार के जनसमुदाय को एक हो जाने की प्रसन्नता

सम्बत् १६४० के पीछे और १६४२ के पहिले किसी वर्ष में लिखा गया होगा।

अब दूसरा प्रश्न यह निकलता है कि इस पत्र के लिखे पीछे बादशाह का इलाहाबाद जाना और सूर-

---

प्राप्त होवे। इसी दूर दृष्टि से ता: ५ आवान सन् २८ (कातिक सुदि १२ सम्बत् १६४०) को राजधानी (फ़तह पुर सीकरी) से कूच हुआ। यह प्रस्थान पूर्व की दिशा को था इसलिये हिन्दुस्थान के अनुभवी पुरुषों की मर्यादा के अनुसार हाथी पर आरूढ़ होकर तीन कोस पधारे। ता० १२ को बरोली ग्राम के निकट नदी के तट पर डेरा हुआ। बड़ा कटकस्थिल मार्ग से गया बदशाह के पास थोड़े से मुख्य सेवक रहे, ३०० से अधिक नावें बादशाह की निज सवारी और कुछ कारखानों के लिये सजी हुई थीं जिसमें विराज कर बादशाह १७ को इटावे के सामने जा उतरे। वहां ज़ैनखां कोका ने एक सुन्दर बाग बनाया था बादशाह ने उसकी प्रार्थना से कुछ देर उस बाग में विश्राम किया। २२ को कालपी में पड़ाव हुआ वहां के जागीरदार मुत्तलबखां ने यमुना के तट पर एक सुहावनी सभा सजा कर बादशाह को बुलाया, दूसरे दिन अकबरपुर के पास जहां राजा बीरबल का घर था सवारी ठहरी। बादशाह ने राजा के स्थान पर सुशोभित होकर उसकी बहुत दिनों की आशा पूर्ण की, इस तरह बादशाह ठौर २

दासजी से मिलना हुआ या नहीं तो इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि नहीं हुआ क्योंकि अकबरनामे में लिखा है कि बादशाह इलाहाबाद बसाने के पीछे

विहार करते और शिकार खेलते हुए ता० १ आज़र (अगहन सुदि ९) को इस पूज्य भूमि में पहुँचे। दूसरे दिन १ शुभ मुहूर्त में नगर की स्थापना हुई जहां चार किले बाने ठहरे, हरेक में बड़े २ महल उठाये गये जिसका आरम्भ उस स्थान से हुआ कि जहां वे दोनों नदियां मिलती हैं। पहिले किले में १२ महल और हर महल में कई निवास हैं। यह बादशाह का निज निवासस्थान था दूसरे में बेगमों शाहज़ादों का रहवास हुआ। तीसरे में दूर के बान्धवों और समीपस्थ अनुचरों को जगह मिली। चौथे में हरेक प्रकार की प्रजा और सेना का निवास हुआ। इन स्थानों में कारीगरों ने खूब कारीगरी दिखाई। किला थोड़े दिनों में बन गया जिसमें हरेक वर्ग को उसके योग्य स्थान मिल गया, फिर कुछ अवधि में शहर भी बस गया। उन दिनों सूखा पड़ने से अनाज महँगा था और बरसात में गङ्गा के बढ़ जाने से लोगों को हानि पहुँचा करती थी इसलिये बादशाह ने एक कोस लम्बा ४ गज़ चौड़ा १६ गज़ ऊंचा एक बांध बँधवा दिया जिससे लोगों को सुख भी हो गया और बहुत से ग़रीब भी पल गये। (अकबरनामा तीसरा दफ्तर।)

दो महीने और कुछ दिन वहां रहे। उनका विचार था कि जब बाग़ी नष्ट हो जावैं तो दक्षिण को कूच करैं पर इतने में ही तो गुजरात से एक बड़े उपद्रव की ख़बर आई और बादशाह दश बहमन (माघ बदि ३) रविवार को स्थलमार्ग से प्रयाण करके ता० ४ असफंदार (फागुन सुदि ३) को फ़तहपुर पहुँचे, पीछे से बांधवगढ़ का राजा रामचन्द्र भी उपस्थित हुआ जिसके लाने को राजा वीरबर और जैनखां इलाहाबाद से (पौस सुदि २ शुक्रवार) को भेजे गये थे। गुजरात का फ़ितूर बैठतेही काबुल में बलवा उठा जिसके मिटाने के लिये बादशाह ११ शहरेवर सन् ३० (भादों सुदि १० सम्वत् १६४२) को पंजाब की तरफ़ चले गये जहां से १३ वर्ष पीछे ता० २६ आबान सन् ४३ (अगहन बदि ५ सम्वत् १६५५) को लौट कर आगरे में आये।

सूरदासजी का देहान्त सम्बत् १६४२ के पहिलेही हो गया था।

११—इस विषय में इतनी बातें विचार करने की हैं।

१—तो आरम्भ में लिखा है कि यह पत्र सूरदास के नाम है जो बनारस में रहता था।

२—जो अलकाब और उपमा सूरदासजी को उस पत्र में लिखी गई है वह वैसीही है जैसी फ़ारसी पत्र व्य-

वहार की परिपाटी में (वली) सन्तमहन्तों के वास्ते लिखी जाती है।

इन दोनों बातों से तो यह सन्देह होता है कि आईनअकबरी में लिखे हुए सूरदासजी के नाम जो यह पत्र लिखा जाता तो उसमें गानविद्या के निपुण गुणियों की सी उपमा होती। सन्तमहन्तों की सी नहीं होती फिर बनारस का रहना इस सन्देह को और बढ़ाता है क्योंकि कथाओं में विशेष करके उनका ब्रज में रहनाही पाया जाता है इससे कदाचित् काशीनिवासी सूरदासजी और ही हों जिनके नाम अबुलफ़जल ने वह पत्र लिखा था ऐसा भ्रम भी होता है और यह शङ्का मन में उपजती है कि जिन सूरदासजी को अबुलफ़जल आईनअकबरी में गवैया लिख चुका है वही उनको सन्तमहन्तों का सा अलकाब * आदाब पत्र में कैसे लिखता।

---

* शेख़ अबुलफ़जल बड़ा निर्द्वेषी विद्वान् था उसने यह पत्र सूरदासजीको उसी उपमा (आदाब-अलकाब) से लिखा है जो फ़ारसी में सत्-पुरुषों के लिये लिखी जाती है। यदि वह किसी मुसलमान संतमहंत (वली) को लिखता तो इस उपमा से ज्यादा क्या लिखता। शेख़ वास्तव में बड़ा भला आदमी था कुल हिन्दुओं को उसका अहसानमन्द रहना चाहिये क्योंकि मुसलमान मुन्शियों और इतिहासवेत्ताओं में शेख़ अबुलफ़जल

काशी में लिखा पढ़ी करने से जाना गया कि वहां कभी कोई सूरदास ऐसे प्रसिद्ध नहीं हुए हैं जैसे कि ये सूरदासजी थे। भारत भर में इनके सिवाय और कोई ऐसा नामी सिद्ध-पुरुष नहीं हुआ है कि जिसको अबुलफ़ज़ल जैसा बड़ा वज़ीर ऐसी नम्रता से पत्र लिखता या बादशाह करोड़ी के नियत करने के लिये उनकी सम्मति पुछवाता।

रही अलकाब की बात सो इसका समाधान भी इस तौर से हो सकता है कि सूरदासजी का नाम बादशाही कायदे से तो आईनअकबरी में गवैयों की श्रेणी में लिखा गया पर वे वास्तव में स्वामी-वृत्ति के महात्मा थे और लौकिक व्यवहार में भी सब लोग उनको महात्मा ही मानते थे। इसी से अबुलफ़ज़ल ने भी अपनी ओर से जो पत्र लिखा उसमें आदाब-अलकाब भी महात्माओं का सा ही फ़ारसी पत्र व्यवहार की परिपाटी से लिखा; क्योंकि वे निरे गवैयेही न थे भगवद्भक्त भी बड़े थे।

ही ऐसा मुनशी और इतिहासवेत्ता हुआ है कि जिसने अपनी बनाई पुस्तकों में हिन्दुओं को काफ़िर नहीं लिखा जैसा कि उससे कम दरजे के लेखक भी अभिमान से लिखते रहे हैं बल्कि बहुत जगह उसने हिन्दुओं की हिमायत की है परन्तु यह स्थल उसके जताने का नहीं है।

इसी तरह क्या आश्चर्य है कि जो वे उस समय अर्थात् जब कि यह पत्र लिखा गया था बनारस में रहते हों। अतोध एक ही जगह कम रहा करते हैं तीर्थ यात्रा और काशी जैसे पुनीत धामों में ही बहुधा अपना समय बिताते रहते हैं। काशी के प्रसिद्ध सुलेखक बाबू राधा-कृष्णदासजी * का भी यही मत है।

इन बातों से, जबतक कि दूसरे सूरदासजी का ठीक पता न लगे हम इस पत्र को इन्हीं सूरदासजी के नाम का मानते हैं।

१२—बाबू हरिश्चन्द्रजी तो सम्वत् १६२० के लगभग सूरदासजी का देहान्त होना लिखते हैं परन्तु चौरासी-वार्ता से जाना जाता है कि सूरदासजी का देहान्त गो-स्वामी विट्ठलनाथजी † के जीते जी हुआ था और गोस्वामीजी माह वदि ७ सम्वत् १६४२ को परम धाम

---

* इस पुस्तक के यथार्थ रूप से सम्पूर्ण होने के पहिले ही इसका उर्दू खर्रा काशीनागरीप्रचारणी सभा के मंत्री बाबू राधाकृष्णदासजी के मँगाने पर उनके पास भेज दिया गया था क्योंकि वे भी सूरदासजी का जीवन-चरित्र लिखते थे उनका वह जीवनचरित्र उक्त सभा की सम्वत् १९५७ की दो पत्रिकाओं में छप चुका है।

† इन गोस्वामीजी का जन्म सम्वत् १५७२ का था।

प्राप्त हुये थे इससे एक दो वर्ष पहिले सम्वत् १६४१ के लगभग सूरदासजी का निर्वाण प्राप्त होना सम्भव है।

१३—सूरदासजी की बनाई पुस्तकों में से केवल साहित्यलहरी में निर्माण काल लिखा है और सम्वत् १६०७ है और उस समय शेरशाह सूर का बेटा सलीमशाह सूर बादशाह था।

१४—सूरदासजी की अवस्था श्रीवल्लभाचार्यजी के निर्वाण समय (सम्वत् १५८७) में यदि २५ वर्ष की मानी जाय तो सम्वत् १६४१ तक जब कि उनके धामप्राप्त होने की संभावना है ८० वर्ष के लगभग की होती है, यदि यह अनुमान सही हो तो उनके जीते हुए इतनी बड़ी २ घटनायें भारत में हुई थीं।

सूरदासजी के समय की घटनायें।

मुग़ल-बादशाह बाबर का काबुल से आकर दिल्ली जीतना और पठान बादशाह इब्राहीम लोदी का उस युद्ध में मारा जाना सम्वत् १५८३।

राणा सांगा का पठानों की सहायता पर सीकरी में आकर बाबर बादशाह से लड़ना और बाबर का विजय पाकर वहां फ़तहपुर नाम गांव बसाना सं० १५८४।

बाबर का मरना और हुमायूं का बादशाह होना सं० १५८७।

४—गुजरात के बादशाह सुलतान बहादुर का चित्तौड़ तोड़ना और हुमायूं का बहादुर को हरा कर गुजरात छीन लेना सं० १५९२।

५—शेरशाह पठान का हुमायूं से राज लेलेना और हुमायूं का सिन्ध में चला जाना सं० १५९८।

६—अकबर का सिन्ध देश के किले उमरकोट में जन्मना सं० १५९९।

७—हुमायूं का हिन्दुस्तान छोड़ कर ईरान देश में जाना सं० १६००।

८—शेरशाह सूर का कालिंजर के किले पर बारूद से जल कर मर जाना और सलीमशाह का बादशाह होना सं० १६०२।

९—मीराबाई की मृत्यु सं० १६०३।

१०—सलीमशाह का मरना और मुहम्मद अदली का तख़्त पर बैठना सं० १६१०।

११—हुमायूं का काबुल की तर्फ से आकर अदली से फिर दिल्ली ले लेना सं० १६१२।

१२—हुमायूं बादशाह का मरना और अकबर का बादशाह होना सं० १६१२।

१३—बैरामखां ख़ानख़ानां का अकबर से बिगड़ना और बाबा रामदास को एक लाख टके देना सं० १६१८।

१४—बैरामख़ांका गुजरात में मारा जाना सं० १६१८।

१७—रामदास का बादशाही नौकर होना सं० १६१९।

१६—अकबर का चितौड़ फ़तह करना सं० १६२४।

१७—शाहज़ादे सलीम का सीकरी में पैदा होना सं० १६२६ तथा अकबर का फ़तहपुर सीकरी में राजधानी स्थापित करना सं १६२८।

१८—मनसबों का दस्तूर निकलना सं० १६३१।

१९—तुलसीदासजी की रामायण रामचरित्र का प्रारम्भ सम्वत् १६३१।

२०—इल्हाबास (इलाहाबाद) का बसना सं० १६४०।

सूरदासजी की कविता।

यशस्वी और भाग्यशाली बादशाह अकबर के समय में जो अच्छे से अच्छे मनुष्य हुए हैं उन सबमें अच्छे कवि, अच्छे गवैये, और अच्छे भक्त सूरदासजी थे। इनकी कविता का क्या कहना है भाषा अच्छी, युक्ति अच्छी, उक्ति अच्छी, उपमा अच्छी, कविता में जो जो बातें अच्छी चाहियें वे सब अच्छीही अच्छी थीं और इसी लिये उनको सूर्य की उपमा दी गई है जैसा कि किसी कवि ने कहा है कि—

दोहा।

सूर सूर तुलसी शशी उड़गण केशवदास॥

अब के कवि खद्योत सम जहँ तहँ करहिं * प्रकास ॥१॥

एक दूसरे कवि ने भी कहा है।

उत्तम पद कवि गङ्ग के कविता को बलबीर ॥
केशव अर्थ गँभीर को सूर तीन गुण धीर ॥ २ ॥

वल्लभ-कुल सम्प्रदाय के आठ महाकवियों में एक सूरदासजी भी गिने जाते हैं इनकी कविता शेष सातों से बढ़ी हुई है। उन लोगों की न इतनी बहुत कविता है और न उन्हों ने इनके बराबर नाम ही पाया है।

इनकी कविता लाखों में नहीं छुपती, वह सर्वांग सुन्दरी है यदि कहीं सरल भी है तो बांकपन से ख़ाली नहीं इनके एक एक पद की रचना लालित्य, अर्थ गौरव, रस, और प्रेम, की परिपूर्णता से ऐसी अपूर्व और अनुपम है कि जिसकी चोट बेतरह दिल पर लगती है। किसी कविने एक व्याकुल और विह्वल मनुष्य को देख कर कहा था कि—

किधौं सूर को सर लग्यो, किधौं सूर की पीर ॥
किधौं सूर को पद सुन्यो, जो अस विकल शरीर ॥

सूरदासजी के ऐसे तड़पा देनेवाले पद जिस वृहत् ग्रन्थ में संग्रह किये गये हैं उसका नाम सूरसागर है और

---

* सूरदास, तुलसीदास केशवदास, कविगङ्ग और बीरबल, ये सब समकालीन और भाषा कविता में अग्र-गण्य हैं।

यह यथा नाम तथा गुण भी है, क्योंकि इस अथाह समुद्र में सर्वत्रही उत्तम रचना और उज्ज्वल कविता के अमूल्य रत्न भरे पड़े हैं। दन्तकथा में जो यह बात कही जाती है कि नव्वाब खानाखानां* ने सूर के पदों को संग्रह करके सूर सागर बनाया है सो सही नहीं है। सूरदासजी ने ही स्वयं सूरसागर को पूर्ण करके फिर सूरसारावली वा सूरसागर-सारावली बनाई है जिस में बहुधा पद सूरसागर के हैं।

सूरदासजी के पदों का अर्थ कितना गहरा जाता है इसके बाबत हम उन्हीं के समय का एक वृत्तान्त लि-

---

* ये नव्वाब बैरामखां खानखानां के बेटे थे सम्वत् १६१३ में पैदा हुए थे। इनका असली नाम अब्दुलरहीम खां था। अकबर बादशाह की सभा के ९ रत्नों से एक रत्न यह भी थे। हम इनका जीवनचरित्र सविस्तार लिख चुके हैं जो भारतमित्र प्रेस कलकत्ते में छपेगा। ये स्वयं कवि थे और कवियों का लालन पालन भी खूब करते थे सम्वत् १६८३ में पंचतत्व को प्राप्त हुए। इनकी कविता बहुत रसीली है जिसकी बानगी रूप दो दोहे यहां लिखते हैं।

जे गरीब सों हित करैं धन रहीम वे लोग॥
कहां सुदामा बापुरो कृष्णमिताई जोग॥१॥
जिन रहीम तन मन दियो कियो हिये बिच भौन॥
तासों सुख दुख कहन की कथा रही अब कौन॥२॥

रखते हैं कि एक दिन अकबर बादशाह की सभा में तान-
सेन ने यह पद गाया।

जसुदा बार बार यौं भाखै।
  है कोउ ब्रज में हितू हमारो चलत गुपालहिँ राखै॥

बादशाह ने पूछा कि इसके क्या माने हुए। तानसेन
ने कहा कि जसुदा बार बार यौं कहती है कि ब्रज में हमारा
कौन ऐसा हितु है जो गोपाल को मथुरा जाने से रो
के क्योंकि वहां जाने पर कंस इनको मार डालेगा।

इतने में शेख़ फ़ैज़ी आगये उन्होंने कहा कि बार के
मायने रोने के हैं अर्थात् जसुदा रो रो कर यौं कहती
है कि है कोउ ब्रज में—

फिर बीरबल आये तो उन्होंने कहा कि बार का
अर्थ द्वार हैं जसुदा द्वार २ यह कहती फिरती है कि
ब्रज में कौन—

इतने में ज्योतिषी जी आये, पूछे जाने पर उन्होंने
कहा कि बार का अर्थ है रोज़, याने जसुदा रोज़ रोज़
यौं कहती है कि "है कोउ बृज में।"

अन्त में नव्वाब ख़ानख़ानां आये तो उन्होंने कहा
कि बार के मायने बाल के हैं जसुदा का बाल २ यौं
कहता है कि ब्रज में कौन ऐसा—

बादशाह ने फ़रमाया कि इन लोगों ने तो बार २
के मायने और ही कहे हैं और वे सब अर्थ कह दिये न-

व्वाव ने अर्ज की कि जहांपनाह हर आदमी का विचार उसकी व्यवस्था के अनुसार होता है इन लोगों ने अपनी अपनी दशा के अनुरूप ऐसे अर्थ कहे हैं नहीं तो यथार्थ वही है जो मैं निवेदन कर चुका हूं।

वादशाह ने पूछा कि अपनी २ दशा कैसी? तो नव्वाव ने अर्जकी कि तानसेन तो गवैये हैं एक एक अन्तरे को वार २ गाना इनका स्वभाव है इसलिये इन्होंने वार २ के मायने कहे हैं।

फ़ैज़ी शायर (कवि) हैं रोना * भाग में लिखा लाये है इसलिये इन्होंने वार का अर्थ रोना वताया।

वीरवल ब्राह्मण हैं और ब्राह्मण का काम घर २ घूमना है इस वास्ते इनको द्वार २ की सूझी।

और ज्योतिषीजी नक्षत्र वार गणना करना जानते हैं उन्हें आदित्यवार, सोमवार और मङ्गलवार की सूझी।

वादशाह यह सुन कर वहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने सूरदासजी की गम्भीर पदयोजना की बड़ी सराहना की।

सूरदासजी की कविता की प्रशंसा उनके जीवित

---

* फ़ारसी कविता में रोने पीटने कुढ़ने और विसूरने के भाव विशेष करके होते हैं, जैसे।

मेरे रोने का लिखा था जिसमें हाल। एक मुद्दत तक वह काग़ज़ नम रहा।

काल से अब तक समय २ में होती रही है। अकबर बाद-शाह के कविराज गङ्गने सूरसागर का बखान इस प्रकार से किया है।

पदन प्रबन्ध सूरजन आगर। बाँध्यो जनसेतू भवसागर॥
बिनु प्रयास कलिकाल सँक्षारा। तेहि प्रसाद उतरत सब पारा

नाभाजी ने † अपने भक्तमाल में यह छप्पै लिखी है।

उक्त चोज अनुप्रास वरण अस्तत अति भारी॥
बचन प्रीति निर्वाह अर्थ अद्भुत तुकधारी।
प्रतिबिम्बित उर दृष्टि हृदय हरिलीला भासी॥
जनम करम गुण रूप सबै रसना परकासी।
विमल बुद्धि गुनि और की जो यह गुनि श्रवनन धरै॥
सूर कवित सुनि कौन कवि जो नहि शर चालन करै।

ब्रजवासीदासजी ने ब्रजविलास ‡ में कहा है।

चौपाई।

श्री सुकदेव कही हरिलीला।
सुनी परी छत सब गुणसीला॥
सूरदास सोइ हरिरससागर।

---

† नाभाजी का ठीक समय ज्ञात नहीं हुआ पर अकबर और जहांगीर बादशाहों के समय के कई राजाओं के नाम भक्तमाल में आने से नाभाजी का जीवित काल सम्वत् १७०० तक माना जा सकता है।

‡ यह ग्रन्थ सम्वत् १८०९ में बना है।

गायो बहुविध परम उजागर ॥
फैलि रह्यो सो त्रिभुवन माहीं ।
गावत सुनत सुजन हरखाहीं ॥

इस समय के कविराजों में से रीवां राज्य के महाराज श्रीरघुराजसिंहजी ने सूरदासजी की अलौकिक और अनुपम कविता पर मोहित होकर उसकी प्रशंसा में कई कवित्त कहे हैं उनमें से कुछ यहां भी लिखे जाते हैं ।

मतिराम, भूषण, विहारी, नीलकण्ठ, गङ्गा,
बेनी, शम्भु, तोष, चिन्तामणि, कालिदास की ॥
ठाकुर, नेवाज, सेनापति, शुकदेव, देव,
पजन, घनानन्द, सुघनश्यामदास की ॥
सुन्दर, मुरारी, बोधा, श्रीपति औ दयानिधि,
युगल, कविन्द, त्यौं, गुविन्द, केशोदास की ॥
भनै रघुराज और कविन अनूठी उक्ति,
मोहि लगी झूठी जानि जूठी सूरदास की ॥ १ ॥

कविकुल कोक कंज पाय के किरिनि काव्य,
विकसे विनोदित ह्वै नेरे और दूर के ॥
सूक गो अज्ञान पंक मन्द भो मयङ्क मोह,
विषय विकार अन्धकार मिटे कूर के ॥
हरि की विमुखताई रजनी पराइ गई,
मूक भये कुकवि उलूक रस भूक के ॥
छायो तेज पुहुमी में रघुराज सूर हरि,

जनजीवमूर सूर उदै होत सूर कै ॥ २ ॥
अखिल अनूठी उक्ति युक्ति नाहिं झूठी नेकु,
सुधा हू तैं सरस सरस को सुनावतो ॥
उद्भुत विराग भाग सहित अनेक राग,
हरि को अदाग अनुराग को सिखावतो ॥
जगत-उजागर अमल पद, आगर सु,
नटनागर ध्याय सूरसागर को गावतो ॥
भाखै रघुराज राधामाधव को रासरस,
कौन प्रगटावतो जो सूर नहीं आवतो ॥ ३ ॥

सूरदासजी के ग्रन्थ ।

सूरदासजी के रचे हुए ग्रन्थों में से अब तक ४ ग्रन्थ देखे और सुने गये हैं ।

१—सूरसागर ।
२—सूरसारावली वा सूरसागर सारावली ।
३—साहित्यलहरी वा दृष्टकूट ।
४—सूर रामायण ।

सूरदासजी फ़ारसी भी पढ़े थे ।

सूर पदों में कहीं २ फ़ारसी शब्दों के आने से लोग अनुमान करते हैं कि सूरदासजी फ़ारसी भी कुछ जानते हों । हम कहते हैं कि कुछ क्या जानते हों अच्छी तरह जानते थे । नीचे के पद में देखो कितने फ़ारसी शब्द एकाही ज़िले अर्थात् जमाख़र्च के हैं, इससे तो यह भी जाना

जाता है कि वे फ़ारसी जानते क्या फ़ारसी का सियाक़ और सवाक़ अर्थात् गणित और साहित्य भली भांति पढ़े हों, पढ़ेही नहीं वरन कुछ दिनों तक कहीं मुत्सद्दी भी रहे हों परन्तु उनकी युवावस्था का सही वृत्तान्त नहीं मालूम होता, जिससे यह क्या और भी बहुत सी बातें छिपी हुई हैं।

इस पद में माल के दफ्तर तथा फ़ारसी जमाखर्च के शब्दों और कायदों की योजना कैसी सरल और सरस युक्ति से की है।

प्रभुजी तुम्हरी कृपा हमारे अवगुण जमाखर्च कर देखे।
फ़ाज़िल पड़े अपराध हमारे इस्तीफ़ा के लेखे॥
अव्वल हर्फ़ हर्फ़ सानी को जमा बराबर कीजे।
सनद वुर्द की हाथ हमारे तलव बराबर दीजे॥
इन्तखाव दोवर्की करके ऐसी अमल जनायो।
दस्ख़त माफ़ करो तिहि ऊपर सूर श्याम गुण गायो॥१॥

इति।

उपन्यास